Principal
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya
PRINCIPAL
Kalipada Ghosh Tarai
Mahavidyalaya
Bagdogra

ISSN 2348-8425

सत्राची

SATRACHEE

An International Registered Peer Reviewed Bilingual Research Journal

A UGC-CARE Enlisted
Peer Reviewed Research Journal

वर्ष 10, अंक 37, नं. 1
अक्टूबर-दिसम्बर, 2022

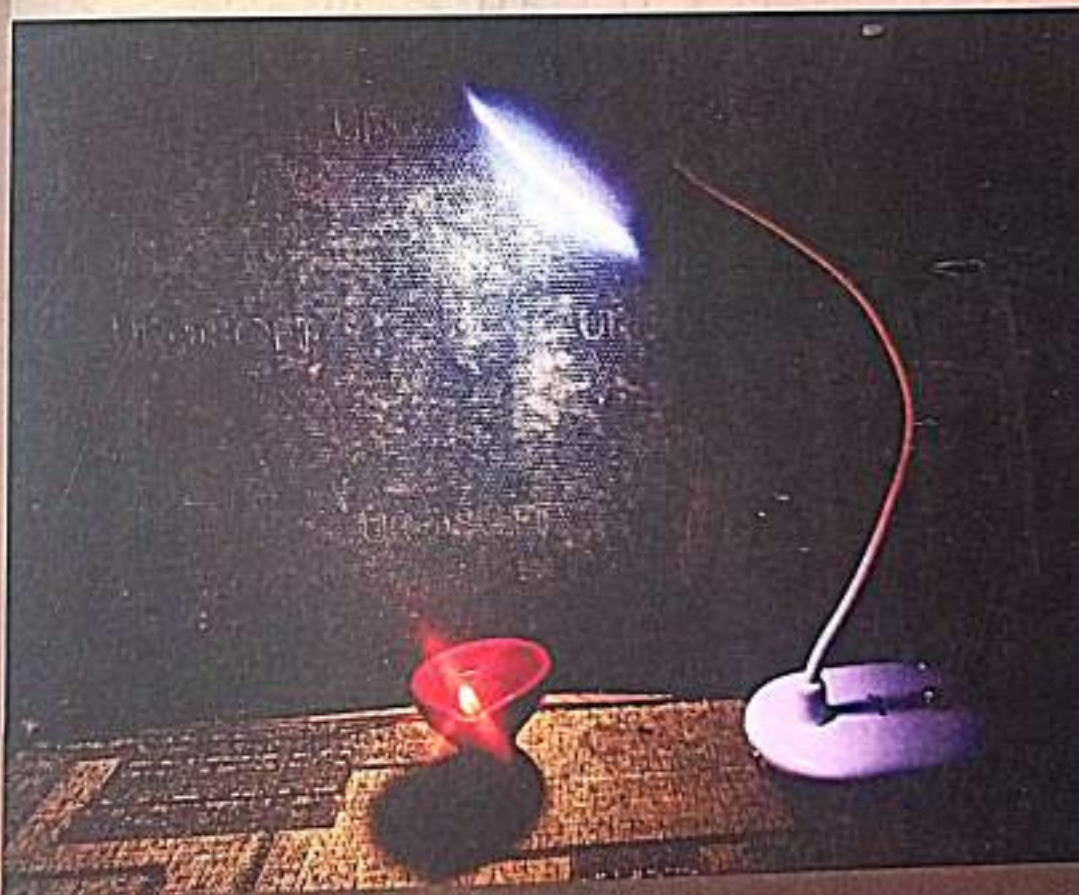

संपादक
आनन्द बिहारी

प्रधान संपादक
कमलेश वर्मा

SATRAACHEE

Principal
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya
PRINCIPAL
Kalipada Ghosh Tarai
Mahavidyalaya
Bagdogra

N : 2348-8425

सत्राची

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान की पूर्व समीक्षित त्रैमासिक शोध पत्रिका

वर्ष 10, अंक 37, नं. 1, अक्टूबर-दिसम्बर, 2022

प्रधान संपादक
कमलेश वर्मा

संपादक
आनन्द बिहारी

समीक्षा संपादक
आशुतोष पार्थेश्वर, सुचिता वर्मा, प्रवीन कुमार यादव

सह-संपादक
अर्चना गुप्ता, जयप्रकाश सिंह, हुस्न आरा

संहायक संपादक
भावना मिश्रा

सलाहकार समिति व समीक्षा मंडल

अनीता राकेश, प्राध्यापक, हिंदी विभाग, जे.पी.विश्वविद्यालय, छपरा।
मुक्तेश्वर नाथ तिवारी, प्राध्यापक, शांति निकेतन, प.बंगाल।
ब्रज बिहारी पांडेय, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी, ओरिएंटल कॉलेज, पटना सिटी।
पुष्पलता कुमारी, एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, म.म.कॉ., पटना।
राजू रंजन प्रसाद, असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास, मुजफ्फरपुर।
नीरा चौधुरी, प्राध्यापक, संगीत, पटना विश्वविद्यालय, पटना।
अरविन्द कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत, पटना विश्वविद्यालय, पटना।

□□□

Principal
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya
PRINCIPAL
Kalipada Ghosh Tarai
Mahavidyalaya
Bagdogra

SATRAACHEE

Peer Reviewed and Refereed Research Journal

A UGC-CARE Enlisted Journal

मूल्य : ₹ 250

सदस्यता शुल्क :

पंचवार्षिक : 4,000 रुपए (व्यक्तिगत)
: 10,000 रुपए (संस्थागत)

आजीवन : 10,000 रुपए (व्यक्तिगत)
: 20,000 रुपए (संस्थागत)

बैंक खाते का विवरण :

SATRAACHEE FOUNDATION,
A/c No. 40034072172, IFSC : SBIN0006551,
State Bank of India, Boring Canal Rd.-Rajapool,
East Boring Canal Road, Patna, Bihar, Pin: 800001

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशित रचनाओं से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपादन/प्रकाशन : अवैतनिक/अव्यावसायिक

प्रकाशक : सत्राची फाउंडेशन, पटना

आवरण चित्र : अंतरिक्ष

संपादकीय संपर्क :

आनन्द विहारी

कला कुंज, दूसरा तल्ला

बाजार समिति रोड, बहादुरपुर, पटना, पिन : 800016

Website : http://satraachee.org.in

E-mail : satraachee@gmail.com

Mob. : 9661792414, 9470738162 (A.Bihari.)
: 9415256226 (Kamlesh Verma.)

❖❖❖

SATRAACHEE

Principal
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya
PRINCIPAL
Kalipada Ghosh Tarai
Mahavidyalaya
Bagdogra

इस अंक में...

संपादकीय

05 :: लेखकीय वैविध्य का संरक्षण — *कमलेश वर्मा*

रपट

07 :: 'खत्री स्मृति सम्मान' 2022 — *वीरेन नंदा*

आलेख

09 :: समय के सफरनामे से होता दस्तावेज़ीकरण — *प्रमोद मीणा*

19 :: जनपदीय भाषाएँ और मीडिया का बदलता रूप — *जिन्दर सिंह मुण्डा*

25 :: भोजपुरी और मातृभाषाओं के बारे में राहुल सांकृत्यायन के विचार — *जितेन्द्र कुमार यादव*

29 :: उदय प्रकाश की कहानियों में 'सत्ता' और 'सिस्टम' की संवेदनहीनता का यथार्थ — *हरे राम सिंह*

36 :: उदय प्रकाश की कहानियों में वृद्ध विमर्श — *मृत्युंजय कोईरी*

41 :: परसाई के व्यंग्य निबंध 'प्रेमचंद के फटे जूते' की समीक्षा — *प्रवीन कुमार यादव*

45 :: स्वयं प्रकाश के उपन्यासों में यथार्थ बोध की भावना — *अमृता*

52 :: शिव कुमार यादव की कहानियाँ : भारतीय समाज की समस्याओं का दस्तावेज़ — *ऋषि कुमार*

62 :: केदारनाथ सिंह का काव्य संसार : एक पुनर्विचार — *विकास कुमार यादव*

71 :: बेटियों की दुनिया की शिनाख़्त : हिंदी कविता की नज़र से — *शशि शर्मा*

75 :: हिंदी दलित कविता : एक विचार — *गाजुला राजू*

81 :: आचार्य रामचंद्र शुक्ल और उनका काव्य — *मधूलिका तिवारी*

86 :: नंदकिशोर नवल की आलोचना दृष्टि — *सुशांत कुमार*

91 :: स्त्री मुक्ति की चेतना और प्रेमचंद — *सिंधु सुमन*

99 :: दिव्या में स्त्री चेतना की अनुगूँज — *जगमोहन सिंह*

108 :: रंगमंचीय रूप संरचना का स्त्री पक्ष — *अपर्णा वेणु*

115 :: स्त्री अस्मिता — *ज्योति वर्मा*

अमृता

अंजली

120 :: स्त्री की प्रगति में परिवार का योगदान : 'छूटे पन्नों की उड़ान' के संदर्भ में — *सुरेश चन्द्र*

125 :: लघु पत्रिका 'उत्तरार्द्ध' में साहित्य विमर्श

विशेष प्रस्तुति

133 :: देवेन्द्र आर्य की कविताएँ — *देवेन्द्र आर्य*

पाठालोचन

144 :: 'शतरंज के खिलाड़ी' का हिंदी-उर्दू पाठ — *आशुतोष पार्थेश्वर*

शोधालेख

161 :: मार्क्सवादी इतिहास लेखन व सबाल्टर्न इतिहास लेखन : एक तुलनात्मक विश्लेषण — *रीता सिंह*

166 :: दीनदयाल उपाध्याय का 'एकात्म मानववाद' : एक पुनरावलोकन — *रवीन्द्र कुमार वर्मा*

171 :: आदिवासी संस्कृति में सामाजिक परिवर्तन : एक विमर्श — *धनंजय शर्मा*

Principal
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya
PRINCIPAL
Kalipada Ghosh Tarai
Mahavidyalaya
Bagdogra

बेटियों की दुनिया की शिनाख़्त : हिंदी कविता की नज़र से

○ शशि शर्मा

'बेटियाँ शहद की तरह होती हैं जो आत्मा की सारी कड़वाहट मिटा देती हैं।" इन पंक्तियों में बेटी को जो मान और महत्व समकालीन कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव ने दिया है, एक समय उसकी परिकल्पना भी कठिन थीं। परंपरागत समाज में बेटियाँ अवांछनीय और बोझ समझी गयी, उसकी अस्मिता और अस्तित्व को बार-बार मिटाने का प्रयास हुआ। कभी भ्रूण रूप में, कभी अभिशापित बेटी और बहन के रूप में, कभी पत्नी रूप में, परिवार में ही उस पर शारीरिक से ज्यादा मानसिक शोषण हुए। ऐसा नहीं है कि वर्त्तमान समय बेटियों के लिए हर नजरिये से ठीक है फिर भी बेटियों को लेकर जो पारंपरिक अवधारणाएँ थीं, उसमें उल्लेखनीय बदलाव जरूर आया है। हाशिये पर रहनेवाली बेटियाँ आज पिता, परिवार और समाज का मान, अभिमान, गौरव और मुस्कान है।

हिन्दी कविता बेटियों के जीवन को करीबी से देखती और महसूस करती है। कई कवियों ने बेटियों के साथ अपने गहन आत्मिक अनुभूति को संप्रेषित किया है तो कईयों ने उनके जीवन के विडंबनात्मक पहलूओं को उजागर किया है। महाप्राण निराला ने अपनी बेटी सरोज को केन्द्रित करके कालजयी शोकगीत 'सरोज स्मृति' की सर्जना की, जिसमें पिता और बेटी के आत्मिक जुड़ाव के साथ-साथ पिता के संघर्ष, पिता के रूप में बेटी को न बचा पाने की बेबसी और निरर्थकता बोध की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। वहीं प्रगतिशील कवि नागार्जुन बस ड्राइवर की सात साल की बेटी की 'नन्हीं कलाइयों की गुलाबी चूड़ियाँ' देखकर बस ड्राइवर के साथ-साथ स्वयं बेटी का पिता होने के गर्व बोध से भर उठते हैं-

"हाँ भाई, मैं भी पिता हूँ
वो तो बस यूँ ही पूछ लिया आपसे
वरना किसे नहीं भाएगी ?
नन्हीं कलाइयों की गुलाबी चूड़ियाँ !"[2]

हिंदी कविता में बेटियों से जुड़ी कई कविताएँ हैं। युवा कवि आशीष त्रिपाठी ने बेटियों पर 'बेटी का हाथ-1', 'बेटी का हाथ-2', 'बेटी का हाथ-3' शीर्षक से कविताएँ लिखी हैं। बेटी का हाथ पकड़कर वे स्वर्गीय सुख की अनुभूति इसी लौकिक जीवन में कर लेते हैं। बेटी के हाथ का संस्पर्श उन्हें महसूस कराता है कि उन्होंने 'आत्मा के सबसे प्यारे टुकड़े को' छू लिया है। यह स्वर्गीय स्पर्श उन्हें 'स्व' की संकुचित भावना से उठाकर 'पर' की उदात्त भावना से भर देती है। बेटी का कोमल हाथ समाज की कठोर स्थिति का साक्षात्कार कराता हैं और वे 'दुनिया भर की औरतों के लिए /साँस भर अवकाश /और अकुलाई आत्माओं के लिए /सबसे मीठी धुनों की /दुआ करते हैं"[3]

वास्तव में बेटी का कोमल हाथ समाज की कठोरता का अक्स बन जाता है। वह समाज जो बेटी को मन्दिर में पूजने के लिए तो तैयार है पर बेटी को अपने [illegible] में स्थान देने के लिए तैयार नहीं, महज इसलिए कि बेटियाँ उनके वंश को आगे नहीं बढ़ा [illegible] कि 'वंश' को जन्म देनेवाली स्त्री कभी ही परिवार का 'मुख्यांश' नहीं बन पाती है। कवयि[illegible]ार्यकर्ता सविता सिंह हमारे देश की इस विडंबनात्मक सच्चाई पर आक्रोश व्यक्त करती है- "नमन करूँ इस देश को / जहाँ मार दी जाती है हर रोज / ढेर सारी औरतें / जहाँ एक औरत का जीवित रहना / एक चमत्कार की तरह है / नमन करूँ उस माँ को / अपनी बेटियों को जनती हुई जो / रोती है 'अब क्या होगा इनका ईश्वर / इस संसार में'।"[4]

हिन्दी कविता में बेटियों के जीवन के कई पहलू अंकित है। 'सात भाईयों के बीच चम्पा' और 'हॉकी खेलती लड़कियाँ' कात्यायनी की सशक्त कविताएँ हैं। 'सात भाईयों के बीच चम्पा' में चम्पा का संघर्ष हर उस बेटी और बहन का संघर्ष है, जिसके अस्तित्व को नेस्तनाबूद करने के लिए पुरुषवादी समाज तरह-तरह के षड्यंत्र रचता है; बावजूद इसके, चम्पा का बार-बार अलग रूपों में अस्तित्व ग्रहण कर मुस्कुराते हुए पुरुष वर्चस्ववादी समाज में विस्तारित हो जाना, एक लड़की के अदम्य जिजीविषा और गहरे आत्मविश्वास का प्रमाण है- "अगले ही दिन / हर दरवाजे के बाहर / नागफनी के बीहड़ घेरों के बीच / निर्भय-निस्संग चम्पा/ मुस्कुराती पायी गयी।"[5]

इसी तरह 'हॉकी खेलती लड़कियाँ' अपने वजूद को गढ़ने के क्रम में पुरुषवादी समाज की परंपरागत मानसिकता पर करारा प्रहार करती है। कवयित्री लिखती है- खुश है लड़कियाँ / फिलहाल / खेल रही हैं हॉकी / कोई डर नहीं। / बॉल के साथ दौड़ती हुई / हाथों में साधे स्टिक / वे हरी घास पर तैरती हैं, / चूल्हे की आँच से / मूसल की धमक से / दौड़ती हुई / बहुत / दूर / आ जाती हैं।"[6]

बेटियों को बोझ माननेवाले समाज को करारा जवाब देते हुए कवि अशोक सिंह घर-परिवार में बेटी की भूमिका को दर्शाते हैं। बेटियाँ बेतरतीब जीवन और सामान को संवारती है, खासकर घर के पुरुषों की अस्त-व्यस्त जीवन और सामान को सजाने-संवारने का काम जितनी कुशलता से बेटियाँ कर पाती है, वह बेटी की अवमानना करनेवाले समाज के लिए देखनेवाली बात है। कवि के शब्दों में- "घर का बोझ नहीं होती हैं बेटियाँ / बल्कि ढोती हैं घर का सारा बोझ / वे ही हैं जो बनाती हैं / मकान को घर / और घर को मकान / होने से बचाती हैं। वे हैं तो / सलामत हैं आपके / कुर्ते के सारे बटन / बची है उसकी धवलता"[7]

बेटियों की महत्ता को परिवार और समाज के सन्दर्भ में कई कविताओं में उकेरा गया है। बेटियाँ सिर्फ कपड़े की धवलता को बचाने का प्रयास ही नहीं करती, बारिश और धूप का इंतजार कर परिवार और समाज में इन्द्रधनुषी छटा बिखेरने का दायित्व निर्वहन भी बखूबी करती है। कवयित्री अंजना बख्शी 'बेटियाँ' शीर्षक कविता में लिखती है- "बेटियाँ इन्द्रधनुष-सी होती हैं, रंग-बिरंगी/ करती हैं बारिश और धूप के आने का इंतजार / और बिखेर देती हैं जीवन में इन्द्रधनुषी छटा।"[8]

एक पिता के जीवन में बेटियाँ क्या महत्त्व रखती है, इसपर कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव लिखते हैं- "अभी कुछ पल बाद धूप सरक जाएगी / आँचल के तरह पत्तियों से / पत्तियाँ अनंत काल तक नहीं रोक सकतीं धूप को / पर बेटियाँ नरम धूप की तरह / बनी रहती हैं सदा / पिता के संसार में / जितनी हँसी होती है बेटियों के अधर पर / उतनी उजास होती है पिता के जीवन में / जो न हँसे बेटियाँ / तो अँधेरे में खो जाते हैं पिता"[9]

कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव बेटी की हँसी में पिता के जीवन का उजास देखते हैं क्योंकि बेटियों की हँसी परिवार की सुख-समृद्धि का पर्याय है। पिता जो एक पुरुष है, घर का भर्ता है, उसकी सफलता का प्रत्यक्ष प्रमाण है- बेटियों का हंसते रहना।

एक समय था जब अधिकतर पिता ही बेटी विरोधी हुआ करते थे, आज वही पिता इन 'नन्हीं कलाइयों'

Principal
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya
PRINCIPAL
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya
Bagdogra

Principal
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya
PRINCIPAL
Kalipada Ghosh Tarai
Mahavidyalaya
Bagdogra

से नेह का नाता जोड़ अभिभूत है। उनके जीवन को ए... ...स्त है। आज समाज तकनीकी रूप से काफी समृद्ध हो चुका है परन्तु यह समृद्धि क... ...ो विकृत मानसिकता की वजह से बेटियों को खतरे में डाल रही हैं। उन्हें माता-पिता के स्नेह और प्रेम से वंचित कर रही हैं। बेटियों पर मंडराते खतरे को कवि उमेश चौहान की 'बिटिया बड़ी हो रही है' कविता में माँ की बैचेनी के माध्यम से महसूसा जा सकता है- 'बिटिया जैसे-जैसे बड़ी हो रही है / दिन-रात आशंकाओं में जीती है माँ / जाने कब, कहाँ, कुछ ऊँच-नीच हो जाय / सड़कों पर आए दिन / लड़कियों को सरेआम उठा लिए जाने/ की घटनाओं से/ बेहद चिंतित होती है माँ / स्वार्थी युवकों के प्रेम-जाल में फँस कर / घर से बेघर हुई तमाम लड़कियों के / हाल सुन-सुन / नित्य बेहाल होती है माँ"[10]

इसी तरह एक पिता के रूप में कवि पवन करण भी भयभीत है। उन्हें 'पंद्रहवें साल में चलती' 'बेटी की खूबसूरती चुभती है"[11] यह चुभन अकारण नहीं है। उपभोक्तावादी समय में जिस तरह प्रेम को देह का पर्याय बना दिया गया है, जिस तरह इस अपरिपक्व उम्र में प्रेम 'प्रेमाभिव्यक्ति से देहाभिव्यक्ति की ओर बढ़ती है', उससे कवि भयभीत है- "दरअसल मैं अपनी बेटी से कहना चाहता हूँ / वह प्रेम करे तो थोड़ा रूककर / प्रेम करने की सही उम्र नहीं यह,"[12]

आदिवासी कवि अनुज लुगुन ने 'सुगना मुण्डा की बेटी' शीर्षक से सात कविताएँ लिखी है। इन कविताओं में आदिवासी बेटियों के जीवन में मंडराते खतरे की ध्वनि सुनी जा सकती है। आदिवासी समाज में बेटियों की स्थिति अत्यंत दयनीय है। यौनहिंसा उनके जीवन का भयावह यथार्थ है ष्ठ उनकी सहजता, सरलता का बेजा फायदा उनके रिश्तेदारों द्वारा भी उठाया जाता है।

"यहाँ जो आदमखोर पहुँचा है / वह जानवर है / जानवर नर है, पुरुष है, पुलिंग है / पितृसत्ता का प्रवक्ता / सेना, पुलिस, व्यवस्था का स्वरूप/ कितनी ही युवतियाँ थीं / जो शिकार बनाई गई / उसकी देह की गन्ध को / अभी महुए में घुलना बाकी था / महुआ के खिलने से पहले ही / उसे पाला मार गया / यहाँ बच्चे, बूढ़े, औरत / और सभी सहजीवी तो मारे गए हैं / पितृसत्ता के उस प्रवक्ता के द्वारा"[13] पितृसत्तात्मक समाज के हिंसक चरित्र को इस कविता में सशक्त रूप में उघारा गया है।

संताली कवयित्री निर्मला पुतुल ऐसे लोगों को 'पूंजीवादी सौदागर' संबोधित करती है। वह बिटिया मुर्मू को 'पूंजीवादी सौदागरों' से सचेत करती है। ये 'पूंजीवादी सौदागर' भोले-भाले आदिवासी बेटियों को शादी और सुखद जीवन का झांसा देकर उनका दैहिक और मानसिक शोषण करते हैं- "सौदागर हैं वे ...समझो..../ पहचानो उन्हें बिटिया मुर्मू .... पहचानो ! / पहाड़ों पर आग वे ही लगाते हैं / उन्हीं के दुकानों पर तुम्हारे बच्चों का / बचपन चीत्कारता है / उन्हीं की गाड़ियों पर / तुम्हारी लड़कियाँ सब्जबाग देखने / कलकत्ता और नेपाल के बाजारों में उतरती"[14]

हिन्दी कविता में बेटियों पर होनेवाले शोषण की कई तस्वीरें मौजूद हैं। बेटियों पर होनेवाला अत्याचार हमारे समाज की कुत्सित मानसिकता का परिचायक है, जिसमें उल्लेखनीय बदलाव की जरूरत है। बेटी को स्नेह और महत्त्व देने की जरूरत है चाहे वह अपनी बेटी हो या अन्य की। बेटी को वस्तु समझकर भोगना या पराया धन मानकर उसके साथ अनैतिक कर्म करना, अमानवीयता का परिचायक है। अगर हम बेटियों को अब भी महत्त्व न दे पाए तो वह दिन दूर नहीं जब घर की परिभाषा बदल जाएगी क्योंकि बेटा मकान तो बनवा सकता है पर घर बनाने की क्षमता बेटियों में ही होती है। बेटियाँ सृजन-शक्ति से संपन्न होती है। वह स्नेह और सहनशीलता की प्रतिमूर्ति होती है। यही वजह है कि बेटी की विदाई एक पिता की आँखों की कोर को आँसुओं से भिगों देती है। राजेश जोशी के शब्दों में- "तुमने देखा है कभी / बेटी के जाने के बाद का घर ? / जैसे बिना चिड़ियों की सुबह / जैसे बिना तारों का आकाश"[15]

Principal
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya
PRINCIPAL
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya
Bagdogra

बेटियाँ आज शिक्षित हो रही है। इतना … रह रही है। बेटियों का यह अल्पकालीन … करने के लिए घर से, माता-पिता के … समकालीन कवि कुंदन सिद्धार्थ की इन पंक्तियाँ में महसूसा जा सकता है- "… ता को भाव विगलित कर देता है, … तीन चौथाई यहीं घर में रह जाती हैं / माँ-पिता के आशीष की पोटली में / घर से चले आने के बाद / एक चौथाई अपने को … / घर से जाकर भी बेटियाँ कहीं नहीं जातीं/ हॉस्टल के लिए बेटी को विदा करते हुए यही सोच …

बेटियाँ जीवन में उल्लास और उमंग का संचार करती हैं। उनके होने और न होने के फर्क मात्र से जीवन में रिक्तता आ जाती है। बेटियों को लेकर समाज और परिवार की सोच में जो परिवर्तन आया है, उसे … देने की दरकार है। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओं' का नारा सार्थक करने के साथ-साथ उन्हें समाज की … से लड़ने का साहस देना हमारा कर्तव्य है। हिन्दी कविता इसी भावबोध को लेकर आगे बढ़ रही है। हिन्दी … में बेटियों को लेकर बहुत सारी कविताएँ लिखी जा रही हैं। बेटियों के संघर्ष और त्याग के साथ-साथ … के प्रति उनके दायित्व निर्वहन को बखूबी उकेरा जा रहा है। कोरोना काल में लाकडाउन के दौरान बेटी ज्योति पासवान ने जिस तरह अपने घायल पिता को साइकिल पर बैठाकर पंद्रह सौ किलोमीटर की यात्रा कर … पुश्तैनी गाँव लौटी, वह बेटियों की भूमिका को दर्शाती है। ज्योति पासबान को केन्द्रित कर कवि कृष्ण कल्पित ने 'डूब मरो' नाम से कविता लिखीं तो कवि सुभाष राय ने 'एक चिट्ठी ज्योति बेटी के नाम' से कविता लिखकर उसके साहस, संघर्ष और कर्तव्यनिष्ठा को उजागर किया है।

अंतत: हिन्दी कविता बेटियों के बहुआयामी जीवन को उजागर करती है। परंपरा से लेकर आज के दौर में बेटियों को लेकर सोच में जो बदलाव आया है, उसे हिन्दी कविता में सुन्दर तरीके से अभिव्यक्त किया गया है। बेटियों की महत्ता को दर्शाने के साथ-साथ हिन्दी कविता बेटी और बेटा में फर्क समझने वाले समाज की संकुचित सोच में बदलाव लाने के लिए प्रयासरत है।

सन्दर्भ :

1. जितेन्द्र श्रीवास्तव, कवि ने कहा, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ. 75
2. नामवर सिंह (सं.), नागार्जुन प्रतिनिधि कविताएँ, राजकमल पेपरबैक्स, नयी दिल्ली, पृ. 33
3. आशीष त्रिपाठी, बेटी का हाथ-2, www.kavitakosh.org/आशीष त्रिपाठी
4. सविता सिंह, पचास कविताएँ, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ. 27
5. कात्यायनी, कवि ने कहा, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.18
6. वही, पृ. 18
7. अशोक सिंह, बेटियाँ, www.kavitakosh.org/अशोक सिंह
8. अंजना बख्शी, बेटियाँ, www.kavitakosh.org/अंजना बख्शी
9. जितेन्द्र श्रीवास्तव, कवि ने कहा, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ. 75
10. उमेश चौहान, बिटियाँ बड़ी हो रही है, www.kavitakosh.org/उमेश चौहान
11. पवन करण, स्त्री मेरे भीतर, राजकमल पेपरबैक्स, पृ. 19
12. वही, पृ. 19
13. अनुज लुगुन, सुगना मुंडा की बेटी-6, www.kavitakosh.org/अनुज लुगुन
14. निर्मला पुतुल, नगाड़े की तरह बजाते हैं शब्द, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, पृ. 15
15. राजेश जोशी, चाँद को वर्तनी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ. 40
16. कुंदन सिद्धार्थ, बेटियाँ, जनसंदेश टाइम्स(दैनिक समाचार पत्र), लखनऊ, अंक 27, सितम्बर 2022

❑❑❑